10 से.मी. वर्षा में ही तालाब लबालब

मधु व भारत डोगरा

चित्रकूट ज़िले की मनगवां पंचायत (माणिकपुर ब्लॉक) में इस मानूसन में 27 जुलाई तक मात्र 100 मि.मी. वर्षा हुई (जो सामान्य अपेक्षित वर्षा से कम है) पर इसके बावजूद यहां हाल ही के समय में खोदे गए अनेकों तालाब लबालब भरे हैं। अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान द्वारा दोराबजी टाटा ट्रस्ट के सहयोग से किए गए जल संरक्षण कार्य को देखने उत्तर प्रदेश के ग्राम विकास मंत्री दद्दू प्रसाद व ज़िलाधिकारी हृदयेश से लेकर तमाम अन्य अधिकारी व विशेषज्ञ पहुंचे व उन्होंने इस कार्य को मॉडल मानकर सम्बंधित अधिकारियों को इससे सीख लेने को कहा है। यदि नरेगा जैसी व्यापक स्तर की योजनाओं में भी इस स्तर का जल संरक्षण कार्य हो सके तो क्षेत्र का कायाकल्प हो सकता है।

27 जुलाई को जब हम मनगवां गए तो एक के बाद एक ऐसे पांच जल संरक्षण कार्य, चेक डैम व तालाबों की श्रृंखला देखने को मिलीं जिनमें कम वर्षा की स्थिति में भी उम्मीद से अधिक जल संग्रहण हो गया है। इनमें से चार तालाब नए बनाए गए हैं व एक है जो पहले से था जिसे संस्थान द्वारा और गहरा किया गया है। पहले से बने नालों व नए निर्माण कार्यों को इस तरह जोड़ा गया है कि एक तालाब का अतिरिक्त पानी दूसरे तालाब में पहुंचता है।

पहाड़ की ओर से बहता पानी खेतों को क्षतिग्रस्त न करे व उनमें बालू न जमा हो इसलिए उसे निर्माण कार्यों से अनुकूल दिशा दी गई है। खेतों में मेड़बंदी व समतलीकरण द्वारा पानी व उपजाऊ मिट्टी रोकने का प्रयास हुआ है। कुछ तालाबों को खोदते समय ऊपरी उपजाऊ मिट्टी को विशेष तौर पर खेतों में डाला गया है।

सरकार द्वारा पहले बनाया गया तालाब सीपेज व टूट-फूट से बेकार हो गया था तो उसमें कोर वॉल बनाकर व काली मिट्टी डालकर उसे नया जीवन दिया गया है। कुछ किसानों के खेत में ही खेत-तालाब बनाकर, उनकी भूमि के मात्र 1 प्रतिशत हिस्से का उपयोग करते हुए, उन्हें सिंचाई व नमी का अच्छा साधन दिया गया है। खेतों के बीच से गुज़रता पानी नमी की स्थिति बनाकर फसलों व आसपास के पेड़-पौधों के पनपने का आश्वासन दे रहा है।

इसी पंचायत के गुरसराय क्षेत्र के मवैया आदिवासी किसान कई वर्ष पहले डकैतों के डर से खेती छोड़ चुके थे। अब सिंचाई के लिए तालाब बनते देख वे फिर से खेती के लिए लौटने लगे हैं और कम वर्षा के बावजूद लगभग तीन-चौथाई छोड़ी गई भूमि पर अब धान, अरहर, ढैंचे आदि की हरियाली है।

इस जल संरक्षण कार्य में गांववासियों की इतनी आस्था है कि हबीब, छोटी कोल व प्यारेलाल वगैरह ने अपनी भूमि का कुछ हिस्सा इसके लिए दान भी दिया है। कृषि, पशुपालन, वनीकरण व बागवानी के लिए यह जल-संरक्षण आशा का संदेश लाया है। ***(स्रोत फीचर्स)***